ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 2ndApril 2018, Revised on 4th April 2018; Accepted 5thApril 2018

आलेख

शांति और समन्वय के लिए अध्यापक

* डॉ. प्रमोदवल्लभ गोस्वामी, व्याख्याता
राजीव अकादमी फॉर टीचर एजुकेशन, मथुरा

Key words: *हिंसा, वैश्विक स्तर, अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और शांति आदि।*

हिंसा चाहे वैश्विक स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर हो अथवा स्थानीय स्तर पर हो उसके नित नए स्वरूप होते हैं जैसे वर्गवाद, संघर्ष, आतंकवाद, कट्टरवाद आदि। ये सभी अनसुलझे विवाद होते हैं। इन दैनिक अनसुलझे विवादों से युद्ध और हिंसा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में हमारे सामने आती है। ऐसे विवादों से युद्ध व हिंसा हमेशा पैदा नहीं होती, लेकिन यह बात यही है कि हिंसा और युद्ध अनसुलझे विवादों की अनेक संभावित प्रतिक्रियाओं मे से एक है। स्पष्ट रूप से हिंसा का तात्पर्य भार–काट एवं एक दूसरे को शारीरिक तौर से नुकसान पहुँचाना ही है। राष्ट्रपिता गांधी के अनुसार हिंसा केवल मार–काट या शारीरिक हानि पहुँचाने तक सीमित नहीं होती वरना समाज में दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करना, उनके लिए बुरा सोचना, अच्छा आचरण न करना, आपस में असहयोग का भाव रखना भी हिंसा ही है। वर्तमान आधुनिक समाज में हिंसा का ऐसा ही रूप सामने आता जा रहा है जिसमें शिक्षक ऐसी इकाई है जो अपने एक इशारे मात्र से बड़ी से बड़ी कार्यवाही की दिशा सकारात्मक रूप में बदल सकता है। आज जरूरत है, ऐसी ही हिंसात्मक कार्यवाहियों को सुलझाने के लिए अहिंसात्मक उपायों की। प्रश्न उठता है कि अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव और समन्वय कैसे स्थापित हो? इसके संदर्भ में एकमात्र अध्यापक ऐसी ईकाई है जो इस समन्वय को ला सकता है। सवाल उठता है कि शांति क्या है? या शांति से हमारा अभिप्राय क्या है? यह एक ऐसा आधारभूत प्रश्न है जिस पर सहज चिन्त न करने से अंतर्राष्ट्रीय समन्वय की ओर इशारा मिलता है।

यह सवाल हमें उस दार्शनिक चिन्तन की ओर ले जाता है जहाँ पर अंतर्राष्ट्रीय समन्वय और शांति ही शांति है। और कुछ नहीं। इसके पूर्व कुछ प्रश्न हैं जैसे क्या शांति और समन्वय वैयक्तिक अनुभूति का विषय है? शांति की प्रकृति कैसी है? क्या शांति और समन्वय मानसिक तनावों व अवसादों की समाप्ति का प्रतिफल है? क्या शांति और समन्वय मानसिक संतोष की स्थिति है? यदि हम भारतीय दर्शन पर ध्यान दें तों उसमें जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति बताया गया है। जहाँ पर मोक्ष जीवन का नितांत वैयक्तिक पक्ष है, तथा इसकी प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक साधना शांति का दूसरा पर्याय है। शांति का दूसरा आयाम मनोवैज्ञानिक है। इसलिए अर्थ एवं काम को पुरुषार्थ चतुष्ट्य की श्रेणी में रखा गया है। इसके अभाव में वैयक्तिक स्तर पर परिवार के स्तर पर और समाज के स्तर पर शांति और समन्वय कोरी कल्पना होगी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूलभूत मौलिक आवश्यकताएँ यथा अर्थ, काम, भोजन आदि को इसलिए जुटाता है कि जीने के लिए अनिवार्य न्यूनतम है स्तर को वह प्राप्तकर सके, क्योंकि इस स्तर से नीचे चले जाने पर जीवन अभावों से ग्रस्त हो जाएगा तथा शांति स्वतः समाप्त हो जाएगी। इसलिए निर्धनता, भुखमरी आवश्यकताओं की पूर्ति कोई अनुचित साधन से करता है तो व्यक्ति स्वयं के जीवन को सुखमय बनाने के लिए दूसरों की सुविधाओं पर अनुचित अधिकार जमाने लगता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति–व्यक्ति मे कलह और संघर्ष शुरु हो जाता है और समाज अशांति की भेंट चढ़ जाता है।

अशांति के कारण व्यक्ति–व्यक्ति के बीच जाति, स्तर, धर्म को लेकर भेदभाव भी है। इन सभी कमियों को एक शिक्षक बखूबी सरलता से मिटा सकता है। इन सभी के मिटते ही सामाजिक सद्भाव और समन्वय आ सकता है। जब ऐसा होगा तो सामाजिक शांति कायम हो सकेगी।

जब हम अपनी पृष्ठभूमि की आड़ में दूसरों को नीचा दिखाते हैं तब भी अशांति पनपती है। अशांति विद्यालयी अवस्था से ही आरम्भ होती है। बच्चों पर विषय वस्तु में न समझ आने का बोझ और तनाव बढ़ाता है और अशांति को जन्म देता है। शांति स्थापित करने के प्रयास में हमें इसकी शुरुआत विद्यालयों से करनी होगीं। विद्यालयों में शांति का वातावरण स्थापित करना होगा, बच्चों को शांति से सम्बन्धित गतिविधियों से जोड़ना होगा बच्चों को शांति से सम्बन्धित गतिविधियों से जोड़ना होगा तभी शांति और सद्भाव व समन्वय स्थापित हो सकेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था–"यदि हमें विश्व को वास्तविक शांति और समन्वय का पाठ पढ़ाना है तो इसकी शुरुआत बच्चों से करनी होगी" वर्तमान समय में शांति और समन्वय के महत्व को देखते हुए राष्ट्रीय फोकस समूह की स्थापना की और इसके द्वारा तैयार किए गए आधार–पत्र में दिए गए सम्बन्धित विचारों को राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा 2005 में स्थान भी दिया गया बच्चों को शांति के लिए शिक्षा देने से उनमें शान्ति की संस्कृति उत्पन्न होगी जो व्यक्ति से लेकर विश्व में शांति–समन्वय के संचार के रूप में स्थाई रूप से काम करेगी।

शांति के लिए शिक्षा : ताकत के बल पर कभी शांति की स्थापना नहीं हो सकती। केवल सहयोग और सामंजस्य की स्थापना के द्वारा ही शांति की स्थापना हो सकती है। इसका अर्थ यह है कि यह कोई वस्तु नहीं है। जिसे जोर जबरदस्ती या बलपूर्वक प्राप्त करा लिया जाये। यदि सच्चे अर्थों में शांति प्राप्त करनी है तो हमें प्रत्येक व्यक्ति के मध्य समझदारी को और अधिक मुखरित और विकासित करना होगा। इसके अतिरिक्त ना तो यह वंशानुगत लक्षण है, बल्कि इसे व्यवहार में सिखाया जाता है। यदि हमें वास्तविक शांन्ति प्रदान करनी है तो बच्चों को (जो भविष्य में शांति के निर्माता की भूमिका भी निभा सकते हैं) को यह सिखाना होगा कि कैसे अपने विचारों, भावनाओं व वस्तुओं को दूसरों के साथ बांटें। इसके लिए शिक्षा को प्रोत्साहित करना होगा। यूनिसेफ शांति शिक्षा को इसी रूप में स्वीकार करता है। वह इसे ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों व व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक तत्वों को प्रोत्साहित करने वाला मानता है जिससे बच्चे, किशोर व युवा इस योग्य हो सकें कि वह किसी भी प्रकार के मतभेदों व हिंसा को रोकने तथा ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न करने में जो शांति स्थापना की ओर ले जाते हैं, सक्षम हों इस प्रकार शांति की उपयोगिता को बच्चों के संदर्भ में कनेक्शन ऑन दि राइट ऑफ चाइल्ड (1981) में यह कहा गया है कि बच्चों की शिक्षा को इस प्रकार निर्देशित करना होगा कि वे स्वतंत्र समाज में जिम्मेदारीयुक्त जीवन जीने के लिए तैयार हो सकें, जिसमें समझदारी, शांति, सहनशीलता, लैंगिक समानता और सभी के बीच मित्रता निहित हो। अतः शिक्षा एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो जनतांत्रिक रीति से व्यक्ति में दीर्घकालीन परिवर्तन ला सकती है। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बीत की है कि शिक्षा व्यवस्था में ऐसे परिवर्तन किए जाँए कि भावीपीढी को शांति स्थापना के कार्य में निष्ठा के साथ लगाया जा सके। इस दिशा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा उठाए गए कदम प्रशंसनीय हैं। उसने अपने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा में शांति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। परिषद् के इस कार्य द्वारा शिक्षा व शांति के नए आयाम निर्धारित करने होंगे। शांति शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ बिन्दु इस प्रकार से विचारणीय है–

1. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जो समाज के स्वरूप को परिवर्तन न करने की क्षमता रखती है। साथ ही समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करती है। ये बुराईयाँ ही समाज में अशांति की जननी होती है। अतः शिक्षा के द्वारा ही उन कारणों (जो समाज में अशांति फैलाते हैं) का निस्तारण किया जा सकता है।

2. शिक्षा के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों, समाजों व राष्ट्रों के बीच संवाद उत्पन्न एवं विकसित किया जा सकता है जो एक दूसरे की संस्कृतियों को समझने तथा उनके बीच आदान–प्रदान करने का आधार प्रस्तुत करती है।
3. समाज में व्याप्त विविधताओं का सम्मान करते हुए उनके बीच सामंजस्य स्थापित करने में शिक्षा की भूमिका हमेशा से रही है। रंगभेद, साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, जातिवाद, कट्टरवाद, आतंकवाद जैसी समस्याओं का समाधान करने मे शिक्षा व्यक्तियों को सक्षम बताती है।
4. शिक्षा के द्वारा हम वैयक्तिक स्तर पर उस सामंजस्य की भावना को जाग्रत कर सकते हैं जिसे कभी ऋग्वेद की ऋषिप्रज्ञा ने इस प्रकार प्रकट किया था।

"संगच्छ ध्वं संवद्ध्वं संवोमानसि जानतम्,
देवा भाग यथापूर्वे सज्जनानां उपासते।
समानो मंत्रः समितः समानी मनः सहचिनतेमेषाम्,
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये व समानेनवे हविषा जूहोमि।
समानी व आकृतिः समानाः हृदयानि वः,
समानभस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।"

अर्थात् हम परस्पर एक होकर रहें परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करें, समान मन से ज्ञान प्राप्त करें जिस प्रकार श्रेष्ठजन एक होकर उपासना करते हैं उसी प्रकार हम भी अपने विरोध त्यागकर अपना कर्म करें। हम सबकी प्रार्थना समान हों, हमारे हृदय समान हों, जिससे हमारा कार्य परस्पर पूर्ण रूप से संगठित हो। इस तरह शिक्षा के द्वारा शांति की स्थापना करना असम्भव नहीं होगा।

शांति की संस्कृति :– संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्ट (1998) के अनुसार शांति की संस्कृति का आधार, प्रजातंत्र, सहनशीलता तथा मानवाधिकारों का सम्मान करना, मतभेदों तथा हिंसा को रोकने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में विकास, शांति के लिए शिक्षा सूचनाओं का सुगम आदान प्रदान तथा महिलाओं की विस्तृत भागीदारी को प्रोत्साहित करना और ऐसे उपाय करना जिससे शांति के लिए शिक्षा सूचनाओं को सुगम आदान–प्रदाना स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके अतिरिक्त शांति की संस्कृति नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों के दृष्टिकोणों तथा कौशलों पर बल देती है जो प्रकृति व मानव के बीच सामंजस्य बिठाने के लिए आवश्यक है, इसमें जीने की खुशी, प्रेम, उम्मीद और साहस के भीतरी संसाधनों के साथ व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है। इसमें मानव अधिकारों के प्रति सम्मान करना, न्याय करने की शक्ति का विकास करना, अपने धर्म के अलावा दूसरे धर्मों को सम्मान देना व उनके सांस्कृतिक क्रिया–कलापों में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना, सामाजिक दायित्व की पूर्ति करने हेतु प्रेरित करना शामिल है। न्याय के क्षेत्र में भी हमें शांति की संस्कृति की जरूरत है। सामाजिक न्याय शिक्षा की और शांति की संस्कृति का महत्वपूर्ण घटक है।

सामाजिक न्याय तथा समानता जिसमें गरीबों, डराए धमकाए हुए वंचितों, शोषितों के उत्पीड़न न किये जाने सम्बन्धी समग्र दृष्टिकोण पर बल देती है, राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित करती है–,

"शांति रखें चाहें सुख दुख हो,
शीत उष्ण आदर अपमान।
राष्ट्रभक्ति में स्थिर होकर
रहता है शिक्षक का ध्यान।।"

शांति का संस्कृति की परिभाषा कई संगठनों ने दी है और अपने अपने दृष्टिकोणों से अवगत कराया है। यूनिसेफ ने भी कहा है कि शांति की संस्कृति जो सांस्कृतिक विभिन्नताओं को प्रोत्साहित करती है जिसमें विश्वास, मूल्यों, व्यवहार व सहयोग की भावना आदि शामिल हैं जो परस्पर सुरक्षा, समानता, पृथ्वी के स्रोतों पर इसमें रहने वाले प्राणियों के बीच समान भागीदारी और साथ–साथ रहने को प्रोत्साहित करती है। पीस एजुकेशन इन यूनिसेफ (फाउण्टेन 1999) में शांति की संस्कृति के लिए अनेक तथ्यों को उजागर किया जिनमें से कुछ मुख्य तथ्य निम्नलिखित हैं :–

1. सभी लोगों के बीच विश्वास का वातावरण यथा, भोजन, पानी अर्थ की पूर्ति करना।
2. पारस्परिक समझदारी को विकसित करना।
3. सूचनाओं को आदान–प्रदान करने हेतु लोगों के बीच एक खुला वातावरण विकसित करना।
4. सूचनाओं के आदान–प्रदान करने हेतु लोगों के बीच एक खुला वातावरण विकसिक करना।
5. लोगों में सहनशीलता की भावना विकसित करना।
6. विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना।
7. विभिन्न धर्मों, जातियों, संस्कृतियो व जीवनशैली में सामंजस्य स्थापित करना।

सांस्कृतिक संदर्भ में शान्ती का वातावरण स्थापित करने में मदद मिलती है। शांति की संस्कृति की आवश्यकता को देखते हुए संयुक्तराष्ट्र की सामान्य सभा में वर्ष (2001–2010) को विश्व के बच्चों के लिए शांति की संस्कृति व अहिंसा के लिए है। इसी सभा में शांति की संस्कृति को सभी मूल्यों दृष्टिकोणों और व्यवहार के तरीके जो मानव विभिन्नताओं और सभी तरह के मानव अधिकारों के प्रति सम्मान करना, हिंसा चाहे किसी भी रूप में हो, अस्वीकार और लोगों के बीच समझदारी स्वतंत्रता, न्याय, समानता, सहनशीलता की भावना के लिए प्रेरित करने के रूप में परिभाषित किया गया है। अतः शांति की संस्कृति को विकसित करने के लिए शांति की शिक्षा आवश्यक है।

अध्यापक को भी अपने विषय पर अधिकार के साथ–साथ मानवीय व्यक्तिव व्यक्तित्व एवं नवपीढ़ी के चरित्र निर्माण में भी सजग होना चाहिए, निश्चित ही शिक्षा एवं जीवन की गुणवत्ता का मापन उसके मानवीय चरित्र में सुदृढ़ीकरण से है। मानवीय व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण के श्रेष्ठ प्रदेय के लिए ही संपूर्ण विश्व एवं मानव समाज शिक्षक को श्रद्धा के साथ नमन करता है। इस संदर्भ में आज भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह मानना है कि अध्यापक के स्तर से ऊँचा राष्ट्र का स्तर नहीं हो सकता। अत्यन्तं प्रासंगिक एवं विचारणी है यह बात। सीधी सी बात है कि किस भी राष्ट्र का स्तर एवं चरित्र देखता हो तो उस राष्ट्र एवं समाज के शिक्षकों को देखना आवश्यक है।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक :–

आधुनिक विकास के युग में शिक्षक कक्षाओं से लेकर विश्वविद्यालय, व्यापार विश्वविद्यालय, व्यापार, प्रबंधन, फिल्म, उद्योग आदि विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षक कई रूप एवं नामों से जाने जाते हैं। वर्तमान में शासकीय क्षेत्र में शिक्षक कई रूप एवं नामों से प्रसिद्ध है। इस समय में शासकीय क्षेत्र की अपेक्षा प्राईवेट सेक्टर के कई क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों एवं शिक्षक अपने श्रेष्ठ गुणात्मक उत्पाद के कारण बाजार में छा रहे हैं जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि श्रेष्ठ गुणवत्ता न देने वाली शासकीय संस्थाएँ धीरे–धीरे पतनोन्मुख होती जा रही हैं। शिक्षाशास्त्री इवान इलियट का कथन सत्य साबित हो रहा है कि गुणवत्ता की कमी के कारण शिक्षण संस्थाएं दिवंगत होती जा रही हैं। इस प्रकार की आलोचना ग्रस्त शिक्षक संस्थाओं में शिक्षक की स्थिति अत्यंत दयनीय है। वर्तमान समय में कुछ शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। वर्तमान समय में कुछ शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की स्थिति बहुत खराब है। सरकार भी अब बड़ी तेजी से

शिक्षाकर्मी संविदा शिक्षक गुरुजी, तदर्थ शिक्षक आदि के द्वारा जिस प्रकार की शिक्षा एवं प्रजातियों का सृजनकर रही है, उनकी शिक्षकीय गुणवत्ता भी संदिग्ध है। महीनों वेतन न मिलना, शिक्षकीय वृत्तिका सुरक्षा एवं प्रलोभन के अवसर न मिलने पर कई शिक्षक भूख बंद, हड़ताल तथा आत्महत्या जैसे रास्ते पर मजबूरन चल पड़ते हैं, यह स्थिति शिक्षकीय अस्तित्व के लिए चिन्तनीय हैं।

शिक्षकीय अस्तित्व की चुनौतियाँ :–

यद्यपि शिक्षक का पद अत्यंत जाता है परन्तु यह आज उच्चशिक्षा, तकनीकि, मेडिकल आदि के क्षेत्रों के उच्च पदाधिकारी शिक्षकों तक ही सिमटकर रह गया है। स्कूली शिक्षा एवं प्राईवेट सेक्टर में कई स्थानों पर शिक्षकों की स्थिति दयनीय है। इसके निम्नलिखित कारण हैं :–

1. **वैश्विक बाजारीकरण का प्रभाव :–**

   भारतीय शिक्षा एवं शिक्षकों पर भी वैश्विक बाजारीकरण का प्रभाव स्पष्टरूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। आधुनिक जीवन में तीव्र प्रतिस्पर्धा का संचार हुआ है जहाँ एक ओर भारत के अध्यात्म गुरु, संत, वैज्ञानिकों ने पश्चिमी जगत् में धूम मचा दी है वहीं दूसरी ओर भारत के दूर ग्रामीण अंचलों में कार्यरत शिक्षक अपने परम्परागत शिक्षण के कारण इस प्रतिस्पर्धात्मकता से दूर हैं। इसीलिए वे आधुनिकता से कटे हुए, एकाकी एवं दयनीय जीवन बिताने को विवश हैं।

2. **विकसित होती आधुनिक जीवन शैली :–**

   भौतिक संस्थानो एवं संचार क्रान्ति के कारण हमारे राष्ट्रीय एवं मानवी मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। भारतीय जीवन शैली में आधुनिक पाश्चात्य जीवन का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर हो रहा है जिसके कारण हमारे देश में आज भी शिक्षक आधुनिक प्रतिस्पर्धा में मौलिकता के स्थान पर आधुनिक जीवन शैली को आत्मसात् कर रहे हैं। इनके परम्परागत मूल्यों में ह्रास हो रहा हैं।

3. **मीडिया का तीव्र प्रभाव :–**

   आधुनिक जीवन शैली को तेजी से आत्मसात करती युवा–पीढ़ी मीडिया के प्रभाव से अत्यधिक उद्वेलित है। उस पर मीडिया का प्रभाव स्पष्ट नजर आ रहा है। जीवन फिल्मी स्टाइल की ओर अग्रसर हो रहा है। मीडिया में प्रदर्शित शिक्षकीय जीवन की छवि अत्यन्त दयनीय एवं चिंतनीय प्रदर्शित की जाती है। कई दृश्यों में तो शिक्षक की छवि हास्यास्पद बताकर उसके पद का अवमूल्य न दिखाया जाता है। यह अत्यंत चिन्ताजनक है।

4. **शिक्षाजगत में राजनैतिक प्रभाव एवं बाहुबल का प्रयोग :–**

   आधुनिक जीवन शैली में कृत्रिमता, व्यवहार एवं यूज एण्ड थ्रो की नीति अनिवार्य हो जाती है। इसलिए मानवीय व्यवहार अधिकांश स्थितियों में स्वार्थमूलक हो गए हैं। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में यह स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि शिशुजन्म के पूर्व से मृत्यु पर्यनत भ्रष्टाचार का षड्यंत्र व्याप्त है। आतंकवादी विस्फोट एवं अपराध के नेटवर्क हमारी राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों को उपेक्षित सा कर रहे हैं। मानवीय चरित्र निर्माण के लिए समाज शैक्षिक के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपनी पदगरिमा को अपराधीकरण एवं मानवीय मूल्यों विस्फोटीकरण से कैसे सुरक्षित रखें। शिक्षक के समक्ष सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह पतन की अंधेरी कोठरी में अपनी शांति की चादर कब तक सुरक्षित रखें।

5. युग निर्माण में शिक्षक की भूमिका :–

यह निर्विवाद सत्य है कि किसी कारखानों, भौतिक, संपदा, संसद या राजनैतिक संगठनों से नहीं अपितु उसके चरित्रवान नागरिकों से होता है। इससे स्पष्ट है कि सशक्त राष्ट्र के निर्माण में स्वाभिमानी चरित्रवान एवं जागरूकों की आवश्यकता होती है। चरित्र का निर्माण मानव जीवन में विद्यालय एवं बाल्यकाल से ही आरम्भ हो जाता है।

इस सम्बन्ध में कोठारी आयोग का यह मूलमंत्र भी प्रासंगिक है कि वर्तमान युग के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है अर्थात् विद्यालय में वर्तमान पीढ़ी को सही दिशा प्रदान करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय कारक शिक्षक ही है। एक आदर्श शिक्षक अपने कार्य व्यवहार चरित्र एवं अध्यापन शैली से बालकों के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। वर्तमान समय में हमारा राष्ट्र चारित्रिक पतन एवं भ्रष्टाचारयुक्त जीवन शैली के कारण शिक्षक की आदर्श स्थितियों से दूर होता जा रहा है। पूरे विश्व में भ्रष्टाचार के कारण शिक्षक की गरिमामयी स्थिति को भी धक्का लगा है। यदि भावीपीढ़ी को चारित्रिक दृष्टि से संपन्न करना है तो उसमें व्यक्तित्व विकास के साथ ही साथ राष्ट्रीय तथ्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षकों के समक्ष निम्न महत्वपूर्ण दायित्व हैं–

1. शिक्षण प्रक्रिया में माननीय एवं राष्ट्रीय मूल्यों को समावेशित करना।
2. विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना की वृद्धि हेतु देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के साथ आजादी में अपनी जान समर्पित करने वाले युगनायकों के प्रेरक आदर्श प्रस्तुत करना।
3. विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों जैसे– धर्म निरपेक्षता, समाजवाद, न्याय समता के आदर्शों को प्रभावी ढंग से पढ़ाना।
4. विद्यार्थियो आतंक, अपराध, विघटन, सांप्रदायिकता के स्थान पर राष्ट्रीय एकता एवं देशप्रेम की शिक्षा देना।
5. राष्ट्र निर्माण में भावात्मक एकता के लिए वे राष्ट्रीय स्तर के पर्व व त्यौहार, संस्कृति भाषा–शैली आदि से सम्बन्धित कार्यक्रमों द्वारा छात्रों में राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
6. राष्ट्रीय सम्पत्ति की रक्षा के लिए संकट सुरक्षा एवं सेवा शिविर केम्पों द्वारा विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण की ओर उन्मुख करना।
7- अपने शिक्षण एवं व्यवहार में आधुनिक मूल्यों के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के संरक्षण व श्रेष्ठ मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से देना।

इस प्रकार राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक अपने साथियों एवंज न प्रतिनिधियों से मिलकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्रनिर्माण में शिक्षक की भूमिका विद्यालय की आदर्शवादी शिक्षण एवं अन्य कार्यक्रमों तक ही सीमित नहीं है, अपितु उसका दायित्व समाज में व्याप्त निरक्षरता अंधविश्वास, गरीबी विघटन, आतंकवाद, साम्प्रदायिक भेदभाव आदि समस्याओं के समाधान में जनसहयोग एवं शासन से मिलकर राष्ट्रीय निर्माण में नए भी आवश्यक है। शिक्षक विद्यार्थियों का भी नहीं बल्कि नई पीढ़ी का निर्माण कर सच्चे अर्थों में वह राष्ट्र निर्माता है। उसकी नई रचनात्मक ऊर्जा शक्ति से निश्चित भारत में महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में संभव होगा। किसी ने सच कहा है–

विश्व का अस्तित्व विखंडित है।
आतंक और भ्रष्टाचार से।
विश्व निर्माण में शिक्षक जुट जांए,
अपने मूल्य और व्यवहारों से।

उस शिक्षक को नमन करें,
उसके आदर्शों का अभिनन्दन है।
नई पीढ़ी के निर्माता शिक्षक को,
बार–बार अब वंदन है।
विश्वशांति शिक्षा का इसी से नन्दन–कानन है।
शांति के लिए शिक्षा में अध्ययन–अध्यापन

प्रक्रिया–कुछ सुझाव :–

शांति शिक्षा में अध्ययन–अध्यापन हेतु प्रत्यक्ष विधियों के बजाए अप्रत्यक्ष विधियाँ अधिक उपयोगी हैं। इस हेतु सम्पूर्ण विद्यालयी परिवेश में शांति–संस्कृति को अपनाना एवं विद्यालयी वातावरण में परिलक्षित करना अति आवश्यक है।

शांति अध्ययन–अध्यापन हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं :–

1. विद्यालयों में समय–समय पर सांस्कृतिक विभिन्नताओं में समन्वय प्रदर्शित करने वाले तथा धार्मिक उत्सवों में सम्बन्धित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
2. ऐसी फिल्मों की सूची तैयार की जाए जो शांति, न्याय एकता को बढ़ावा देती हों तथा उन्हें समय–समय पर दिखाया भी जाए।
3. विद्यालयों में छात्रों से ऐसे कार्य यथा सफाई, पौधे लगाना आदि कार्य कराए जायें जिसे सभी बच्चे मिल–जुलकर करें जिससे उनमें परस्पर सहयोगी की भावना का विकास हो।
4. किसी भी क्षेत्र में वर्तमान समय में मीडिया की भूमिका को नजर–अन्दाज नहीं किया जा सकता है। अतः शिक्षा में शांति के प्रयास में मीडिया को सहयोगी बताया जाए तथा समय–समय पर विद्यालयों में बच्चों को शांति से सम्बन्धित विषयों पर संबोधित करने के लिए प्रमुख पत्रकारों के व्याख्यान एवं शुद्ध विभीषिका, हिंसा के परिणामों पर आधारित चलचित्र एवं समाचारों का प्रदर्शन किया जाए।
5. शांति से सम्बन्धित विषयों पर समय–समय पर सेमिनार/समूह परिचर्या का आयोजन किया जाए।
6. विद्यालयों में शिक्षकों व अभिभावकों को शांति से सम्बन्धित व्यवहारों की जानकारी।
7. शांति से सम्बन्धित व्यवहारों का ज्ञान देने के लिए शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
8. विद्यालयों में एक ऐसे रीडिंग रूम की स्थापना की जाए जिसमें शांति–विषयक समाचारों व घटनाओं की पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध रहें।
9. शिक्षकों को शांति व्यवहार के संदर्भ में बच्चों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे बच्चे प्रेरित हो सकें।
10. शांति के व्यवहार को बच्चों में संचारित करने के लिए कुछ बच्चों को अच्छा व्यवहार प्रदर्शित करने के बदले में पुरस्कृत करने की व्यवस्था की जाए। यही नहीं अत्यावश्यक कदम यह भी होना चाहिए कि पाठ्यक्रमों और पाठ्य वस्तु बच्चों में दिन–प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी हों, बच्चे अपने अनुभवों की कक्षा में चर्चा करें और विद्यालयी ज्ञान को इनसे जोड़कर सीख सकें। इससे न समझ में आने वाली विषयवस्तु के कारण पैदा होने वाला तनाव घटेगा।

साथ ही बच्चों में समझ का चस्का भी पैदा होगा जो नई तरह के द्वन्द्वों को मिटाकर शांति की स्थापना में सहायक होगा।

इस प्रकार विद्यालयी परिवेश में शांति संस्कृति की स्थापना कर भावी नागरिकों में शांति उन्मुख व्यवहार सुनिश्चित किया जा सकता है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति के संदेश को संचारित कर सकेगा और प्रत्येक बालक स्वयं को विश्वसमुंदाय का नागरिक अनुभूत कर सकेगा।

सन्दर्भ

यूनाईटेड नेशन 1998 कल्चर ऑफ पीस (13, 15 जनवरी 1998)

http:/www.unesco.org/jyep/07uk/uk-sum-refloc.htm.

यूनाइटेड नेशन एसेम्बली 53 सेसन एजेंडा आइटम 31, 19 नवम्बर 1998

यूनाइटेड नेशन जनरल एसेम्बली 1998, दि कनेक्शन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड

विश्व के महानशिक्षा शास्त्री–वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद 1972, बिहार हिन्दी अकादमी, पटना

डेवलपिंग ए कल्चर ऑफ पीस एण्डनान वाइलेंस थ्रू एज्युकेशन–वार्ड एशले जे. 2001

http:/www.mkgandhi.org/articles/peace.4.htm/द्वारा

मार्च 2009 में प्राप्त।

ए कल्चर ऑफ टीचिंगपीस–वेल्स लीच.सी.–2003

http:/www.commandcams.org/views03/0616-01.html द्वारा

मार्च 2009 में प्रकाशित :–

नेशनल फोकस ग्रुप ऑफ एज्युकेशन फॉर पीस (शोधपत्र) नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी. 2006. एज्युकेशन एण्ड सिगनी फिकेंस ऑफ लाइफ–जे.कृष्णमूर्ति–कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन–1992.

कोठारी आयोग–मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय शिक्षानीति–मानव संसाधन विकास विभाग, नई दिल्लीं।

शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभाव–एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली।

आधुनिक शिक्षा–एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली।

शिविरा–अंक 32, वर्ष 2006, राजस्थान।

*** Corresponding Author:**
डॉ. प्रमोदवल्लभ गोस्वामी, व्याख्याता
राजीव अकादमी फॉर टीचर एजुकेशन, मथुरा